'टोमॅस हार्डी' एवं 'मुंशी प्रेमचंद' के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का तुलनात्मक अध्ययन

ओडेदरा भरतकुमार जे.

१. प्रस्तावना

भारत कृषि प्रधान देश है। इसकी ७५ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार भारत की आत्मा ग्रामों में निवास करती है। पिछली दो शताब्दियों से कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाये घटित हुई कि ग्रामों का स्वरुप ही बदल गया है। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, यातायात के विकसित साधनों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था सहित संपूर्ण ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया और आर्थिक द्रष्टि से स्वावलंबी गाँव परावलंबी होते चले गये और सुसंगठित गावों में विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगी। ग्रामीण जन शहेरों की और आकर्षित होने लगे क्योंकि ग्रामीण व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रसित हो गई। गाँव में गरीबी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता तथा कृषि से संबंधित अनक समस्याओं का प्रादुर्भाव हुआ, फलत: उनकी स्थिति खराब होती चली गई। यहाँ पर 'टर्मिस हार्डी' एवं 'मुंशी प्रेमचंद' के उपन्यासों में ग्रामिण जीवन चित्र द्रष्टव्य है।

२. टॉमस हार्डी के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

टॉमस हार्डी २ जून, १८४० को डार्सेट के देहांत में बसे बोकैम्पटन नामक एक गाँव में पैदा हुए थे। हार्डी ने अपने बचपन में इस देहांती संसार के अक्षत आनंद और आडम्बरहीन जीवन का उपभोग किया था और अपने जन्म क्षेत्र के प्रति उनका प्रेम इतना प्रबल था कि उन्होंने अपने उपन्यासों में इसका उन्मुक्त प्रयोग किया। टॉमस हार्डो ग्रामों को अद्वितीय बताते है, अत: इसका धीरे–धीरे विघटन होते देखना उसके लिए बहुत कष्टपद्व था। ग्रामीण विघटन की यह प्रक्रिया उनके विभिन्न उपन्यासों में भली प्रकार द्रष्टिगत होती है।

जीवन के विभिन्न आवरणों के आपसी टकराव का विवेचन हार्डी द्वारा द मेयर ऑफ फास्टर ब्रिज' (१८८६) में भली प्रकार किया गया है। यह उपन्यास हालाकि, प्रबल भावनाओं का सशक्त नाटकीकरण है, दुसरी और यह परंपरा एवं आधुनिकता के, बीच के क्रुर द्वन्द्व को भी दर्शाता है। हैन्वर्ड एवं फारफरे प्राचीन एवं नवीन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रतिनिधियों क रुप में विशिष्ट महत्व रखते हैं।

कास्टरब्रिज की अर्थ व्यवस्था प्राथमिक रुप से कृषि आधारित ग्राम्य अर्थव्यवस्था थी और जैसा कि डेविड डेशिश कहा है, ''अधिकतर, कास्टरब्रिज आसपास के ग्राम्य जीवन का स्तंभ, केन्द्र एवं शक्ति आधार था तथा यहा बहुत सारे कारखानोंवाले नगरों से भिन्न था जो स्थापित विजातीय पदार्थो की भाँति होते हैं।''[१] हार्डी लिखते है ''कास्टब्रिज अपने आसपास के ग्राम्य जीवन का पूरक था, न कि इसका शहरी प्रतिपक्ष।''

हैन्वर्ड का बेकरी वालों के साथ अपने उगाए गेहूँ को लेकर झगडा होता है उन्हें शिकायत है कि उसका गेहूँ खराब है । वह अपनी बात पर अडा हुआ है, ''अगर किसी ने मुझे यह बताया कि पके हुए गेहूँ को अच्छे गेहूँ में कैसे बदला जा सकता है तो में उसे सहर्ष वापिस ले लूँगा ।''[२] डॉनल्ड फारफरे जो अभी–अभी उत्तर आया है, खराब गेहूँ को धारने की विधि जानता है तथा वह यह विधि अचंभित हैन्वर्ड के सामने प्रदर्शित करता है । हैन्वर्ड फारफरे द्वारा आयातित नए मशीनी द्वन्द्व के बारे में तिस्कारपूर्ण टिप्पणीयाँ करता है ।

इसी प्रकार टैस ऑफ डर्वर विल्ब (१८९१) भी एक प्रभावशाली दस्तावेज के रुप में उभरता है तथा कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के विघटन की प्रक्रिया एवं व्यक्ति विशेष एवं समाज पर उसके प्रभाव को दर्शाता है । उपन्यास के प्रमुख पात्र टैस के दु:खद जीवन को पाढ़क वर्ग के सम्मुख रखा है । टैस में परंपरागत नैतिकता से संबंधित समस्याएँ लेने के अतिरिक्त हार्डी देहात के उन्मूलन से संबंधित कई बडी गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का भी वर्णन करते है । श्रमिकों का शोषणा हार्डी के शब्दों में, ''वे निरंतर काम करते रहे ..... दोपहर में बारिश फिर आ गई ..... मरियन बोली कि उन्हें और काम करने की आवश्यक्ता नहीं । लेकिन, यदि वे काम नहीं करेंगे तो उन्हें पगार भी नहीं मीलेगी, इसलिए वे काम करते ही रहे ..... ।[३]

हार्डी ने इस बात पर भी बहुत बल दिया है कि मशीन युग, जो नगदी के रिश्तों पर आधारित है, सामाजिक जीवन एवं सहचर्य की भावना को नष्ट कर देता है । आयोच्य उपन्यास में हार्डी अधिकारीयों की निर्ममता तथा अमानवीयता पर भी प्रकाश डालता है ।

जूड द ऑब्स्कयोर (१८९५) भी शहरीकरण एवं आधुनिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप जन्मी कुछ गंभीर त्रासदियों की और इशारा करता है । यह उपन्यास जूड के दोहरे अनुरागों के बारे में है – शिक्षा एवं प्रेम । उनकी प्राप्ति करने के लिए वह किसी भी सीमा तक जा सकता है और यह किसी भी सीमा तक जाना उसके विनाश का कारण बनता है । यह उपन्यास मैरीग्रीन के छोटे से गांव से आए नौजवान का बहुत यथार्थ चित्रण करता है । हार्डी उत्तरी वैसेक्स के उतार – चढ़ाव वाले क्षेत्र की गोद में बसे छोटे से गाँव का वर्णन इस प्रकार करते हैं, ''बहुत से छप्परवाले और ढलानवाले मकान विगत कई वर्षो में ढहा दिए गए थे तथा जंगल में बहुत से पेड गिरा दिए गए थे । गिरजाघर ..... गिरा दिया था ..... उसकी जगह आधुनिक गोथिम डिजाइन की एक नई ऊँची इमारत, जो अंग्रेजी आँखों के लिए अनजानी थी, जमीन के एक नए भाग पर खडी कर दी गई थी, एक ऐसे ऐतिहासिक रिकार्ड रखनेवाले विरुपक द्वारा जो लंदन से आया था और एक ही दिन में वापिस भी लौट गया ।''[४]

''मैं शायद एक तुच्छ शिकार था उस मानसिक एवं मानसिक अशान्ति का जिसने आजकल इतने सारे लोगों को दु:ख दिया है ।''[५]

३. मुंशी प्रेमचद के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० में काशी के लमही नामक गांव में कायस्थ परिवार में हुआ था । इसलिए प्रेमचंदजी भारतीय ग्रामीण जीवन की विपतियों से पूर्णतया परिचित थे । उनके उपन्यासों में

तत्कालीन भारतीय समाज के विभिन्न वर्गो का सच्चा स्वरुप देखने को मिलता है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण समाज, आर्थिक समस्या, शोषित मजदूरों तथा किसानों का सजीवन चित्रण मिलता है।

प्रेमचंदजी कृत 'रंगभूमि (१९२५) उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन तथा गांवो में औद्योगिकरण के फलस्वरुप जो स्थितियाँ पैदा हुई है उसका विवेचन है। प्रथम विश्व युध्ध ने देश के उद्योग धंधो को विकास में बहुत बडी सहायता की। स्वार्थी जोन सेवक बडा भला बनकर कहता है, ''हमारी जाति का उद्धार कला–कौशल और उद्योग की उन्नति में है। इस सिगारेट के कारखाने में कम–से–कम एक हजार आदमियों के जीवन की समस्या हल हो जायेगी ..... मेरा कारखाना ऐसे बेकारों को अपनी रोटी कमाने का अवसर देगा।''[६]

'रंगभूमि' उपन्यास में सूरदास भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। सूरदार औद्योगिकरण का विरोधी नहीं था। असल में वह उसके कुपरिणामों से चिंतित था। वह जमीन का मालिक नहीं संरक्षक मात्र रहना चाहता था। दूसरी और औद्योगिकरण की समस्या एवं कुपरिणामों का समाधान गृह – उद्योगो एवं लघु स्तरीय उद्योग में देखते है। ग्रामिण जनता का शहरों की और आकर्षण से वह व्यथित है।

अलोच्य उपन्यास में प्रेमचंदने औद्योगिक नैतिकता का विस्तृत वर्णन करके उद्योगपतियों की मनोवृत्तियों के विरुद्ध जनमत तैयार किया है। देश के औद्योगिकरण में जब इस प्रकार के लोग कार्य कर रहे है। तब उससे ग्रामीण जनता और देश को कोई लाभ नहीं पहुँच सकता।

ग्रामीण जनता पूर्वजन्म में विश्वास रखती है। 'सूरदास' पूर्वजन्म पर अटल आस्था रखता है, ''मेरे रुपये थे ही नहीं, शायद उन जन्मों में मैने भैरो के रुपये चुराए होंगे।''[७]

अत: प्रेमचंदनी 'रंगभूमि' उपन्यास में अंग्रेजो की व्यवस्था, मशीनयुग, औद्योगिकरण के परिणाम, टूटते ग्रामीण जीवन आदि का विस्तृत रुप से दर्शन कराये है।

'गोदान' (१९३६) भारतीय ग्रामीण संस्कृति को केन्द्र में रखकर लिखा गया यथार्थवादी उपन्यास है। 'गोदान' हिन्दी उपन्यास साहित्य की ही नहीं अपितु समग्र विश्व साहित्य की अमर कृति है। 'गोदान' में मुलत: होरी मुख पात्र है जो पुरे भारतीय कृषकों का प्रतिनिधित्व करता है। वह महाजनी, जमींदारी, सामंतवादी व्यवस्था के सामने अपना जीवन व्यतित करता है, यही स्थिति पूरे ग्रामीण किसानों की है। प्रेमचंद होरी को सोचनीय आर्थिक दशा का चित्रण करते हुए लिखते है, ''एक तो जोडे की रात दूसरे माघ की वर्षा। मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। होरी ..... आज तम्बाकु न मिला जिससे मन बहलता। ..... अपनी गर्म सांसो से अपने को गर्म करने की चेष्टा कर रहा था।''[८]

'गादान' में ग्रामीण जीवन में शोषण की विकट समस्या है। उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग का शोषण प्रणाली 'गोदान' में देखी जा सकती है। राय साहब अमरपाल सिंह शोषक वर्ग का प्रतिनिधिपात्र है, ''मुझे क्या अच्छा लगता है कि निर्जीव किसानो का रक्त चूंसु और परिवारवालों की वासनाआ की तृप्ति के साधन जुटाऊँ, मगर क्या करु ?''

मुंशी प्रेमचंद ने 'गोदान' में ग्राम्य जीवन एवं कृषक संस्कृति को सुक्ष्मता से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। गोबर पिता होरी की दयनीय स्थिति से दु:खी होकर सोचता है, ''वह गुलामी करता है, लेकिन भरपेट खाना तो खाता है। केवल एक ही मालिक का तो नौकर है। यहाँ तो जिसे देखों रोब जमाता है। गुलामी है पर सूखी। महेनत करके अनाज पैदा करो और जो रुपयें मिले, वे दूसरे को दे दो।''[९] प्रेमचंद 'गोदान' उपन्यास में किसान के स्वभाव एवं ग्रामीण मान्यताओं का भी चित्रण किया है। किसानों में देवत्त्व इस सीमा तक है कि परिस्थितियों की विषमता पहचान नहीं पाता। होरी का यह देवत्त्व को लक्ष्य कर कहा है, ''काश: ये आदमी ज्यादा और देवता कम होते तो ये न ठुकराये जाते। देश में कुछ भी हो, क्रांति ही क्यों न आ जाये, इससे कोई मतलब नहीं। उनमें अपनी जीवन की चेतना ही जैसे लुप्त हो जाती है।''

४. निष्कर्ष

उपरोक्त रुप में 'टॉमस हार्डी' और 'मुंशी प्रेमचंद' की उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। हार्डी एवं प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण एवं सर्वहारा वर्ग के जीवन को कथा केन्द्र में रखा गया है। 'गोदान' एवं 'द मेयर ऑव कास्टरब्रिज' में ग्रामीण किसानों के जीवन की विद्रुपताएँ एवं कठिनाइयों को स्पष्ट किया गया। 'रंगभूमि' और 'जूड द ओब्स्क्योर' में शहरीकरण एवं औद्योगिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप जन्मी कुछ गंभीर त्रासदियों की और इशारा किया है।

संदर्भसूचि

१. ए क्रिटीकल हिस्ट्री ओफ इंग्लिश लिट्रचर, डेविड डेशिश –पृ. १०७२
२. द मेयर ओफ कैस्टरब्रिज, टॉमस हार्डी
३. टैस ओफ डरबर विल्ज, टॉम्स हार्डी–पृ. ३०३
४. जूड द ओब्स्क्योर (पून: मुद्रित), टॉमस हार्डी–पृ. ३०३
५. वही,–पृ. ३९४
६. विशिष्ट विद्या का अध्ययन, डो. कमलेश देसाई, –पृ. ०२१
७. रंगभूमि (भाग–१)–पृ. २०४
८. गोदान, प्रेमचंद– पृ. १५८
९. गोदान, प्रेमचंद–पृ. २५४